

बागपत में मल्लि पृथ्वीराज चौहान के शासनकाल के दुर्लभ सक्किंके

चर्चा में क्यों?

हाल ही में बागपत जनपद के खेकड़ा के नकटवर्ती दलिली-सहारनपुर हाईवे से सटे गाँव काठा के प्राचीन टीले में पुरातात्विक स्थल नरीक्षण में दलिली अधिपति राजा पृथ्वीराज चौहान सहित, राजा अनंगपाल देव, राजा मदनपाल, राजा चाहड़ा राजदेव के समय के 16 दुर्लभ सक्किंके प्राप्त हुए हैं।

प्रमुख बदि

- इतिहासकार डॉ. अमति राय जैन का कहना है कि यह उपलब्ध बागपत एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश के इतिहास के लिये नया आयाम खोलेगी, क्योंकि किसी भी वंश के शासकों के सक्किंके की श्रृंखला प्राप्त होना, वहाँ उस क्षेत्र पर उन राजाओं के आधिपत्य को सिद्ध करता है। मुद्रा शास्त्र के आधार पर शोध करने वाले शोधार्थियों के लिये यह खोज काफी महत्त्वपूर्ण है।
- ज्ञातव्य है कि बागपत जनपद में 2005 में शहजाद राय शोध संस्थान के निदेशक डॉ. अमति राय जैन के प्रस्ताव पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने उत्खनन कार्य किया। उसके बाद सन् 2018 में सनौली का उत्खनन का कार्य हुआ, वहाँ से प्राप्त दुर्लभ पुरावशेष तथा तांबे से निर्मित लकड़ी के युद्ध रथ भारत में प्रथम बार प्राप्त हुए। उसके उपरांत से जनपद बागपत संपूर्ण विश्व के पुरातत्ववद् एवं इतिहासकारों के लिये रोमांचक खोज एवं शोध का केंद्रबिंदु बना हुआ है।
- इस संबंध में इतिहासकार अमति राय जैन का कहना है कि यह प्राचीन टीला हजारों वर्षों से यह मौजूद है। यहाँ के स्थल नरीक्षण में कई बार यहाँ से कुषाण काल एवं बाद की सभ्यताओं के अवशेष, मृदांड इत्यादि प्राप्त होते रहे हैं। उसी श्रृंखला में फलिहाल 16 सक्किंके का प्राप्त होना सिद्ध करता है कि यहाँ कोई बड़ी मानव बस्ती उस समय रही होगी, जहाँ पर व्यापारिक लेन-देन में सक्किंके का प्रचलन था।
- सक्किंके के खोजकर्ता इतिहासकार डॉ. अमति राय जैन ने सक्किंके की धातु के बारे में बताया कि यह बलिन धातु के सक्किंके हैं, जिसका निर्माण चांदी एवं तांबे को मिलाकर किया जाता था। चांदी क्योंकि अतुर्लभ थी तो सक्किंके को बनाने में उसमें तांबे की मात्रा भी मिलाई जाती थी।
- यहाँ से प्राप्त सक्किंके में कुछ सक्किंके को रासायनिक विधि से साफ किया गया है, जिससे उन पर लिखे गए नामों का उल्लेख स्पष्ट रूप से किया जा सका है।
- पृथ्वीराज चौहान (सन् 1178-1192 ई.), चौहान वंश के हद्वि क्षेत्रिय राजा थे, जिन्होंने उत्तर-भारत में 12वीं सदी के उत्तरार्ध में अजमेर और दलिली पर शासन किया था।